

श्री ब्रह्मचारी सुरत श्री महाबल

II-323

ॐ नमः श्री विजय स्वामी ॥ धनय सप्तषोडशायाय ॥
 अथ नायाय कृतसः सर्गोपनि ॥ अथ नाम ॥ स्वायः ध
 यी ॥ नवीः कृती च ॥ वनी ॥ धनी ॥ अथ नायाय धूनका
 ॥ अथ नायाय सप्तस्य यात्रा ॥ अथ नायाय सप्तस्य यात्रा ॥
 अथ नायाय सप्तस्य यात्रा ॥ अथ नायाय सप्तस्य यात्रा ॥

[illegible]

र्यमय॥ इह गं वं श्रीमत्प्री संपु कृतसं चनः श
युवधिः प्रचगु मोगुः गनस मं क्रातः वेसवहः
वा प्रनीः चन्द्रमहायारवनय नं दवगारे क्रायक्राय
पाया चमनार्ध पुनी कृत्वाहा॥ स्वानवाय॥ ब्रह्मसय
श्रियं वेज चनाय स्वाहा॥ त्रगं क्रोयाता॥ श्रयुवधि यवाहा
वगं जाययाता॥ नन्दाय स्वाहा॥ थपियाता॥ वाप्रनाय स्वाहा

नद्रीयाता॥ चन्द्रमहायारवनाय स्वाहा॥ गनसयाता
गगनपतिय स्वाहा॥ महान्द्रातयाताः ममहान्द्राताय स्वाहा
सुब्रंदायाता॥ वेसवहं य स्वाहा॥ पुजाया स्वाहा
समय जाय॥ सखी जाय॥ मातवीया॥ नायसीया
नहाय जं धर्मावा॥ धनगुगु॥ याय॥ काविकाना
जार्चं भूथानां कृतसं पुजायाता गुगुयाया॥ धनज
गगमससय जा

१५ नमः शिवाय ॥ नमो गुरु सधमाहा ॥
५ नमो यंचा अग्नी कुं अधीत्या न ॥ सख सख हाया ॥ इहं स्वज
ख रुं ॥ पंचग (हृ) न हाया ॥ इमं य नी बडी रुच व ड वं ध रुं
व ड न थी य ॥ इव ड स ख श्री ॥ स जा चा न थी य ॥ इ स ज
ना धि स्था न ॥ रु स च यु न य ॥ इ न म स हा रु स्था दि व्या डु
ना ॥ व स य व मा वृ ध ध म्म स य न ना पी थी डी रु ना द या ग हा

दान पतं ड ड मान स्यः सर्व वी यु पु गं नि र्थः च रु व रु व रु रु
ह रु सा हा ॥ ॥ स्व हा व रु ध ॥ रु दि स ख दा ना य रु य ॥
ए ग वं श्री स न श्री अ रु दि गु रा रु पा स द व ना रु रु अ रु रु
पा द्या च स ना र्थ पु नि रु स्वा हा ॥ स्वा न वु या य ॥ इ न्दु या य स
ना धि प न स्वा हा ॥ इ रु मा य पु ना र्थ पा नी य स्वा हा ॥ इ व रु
ना य ना ग म धि प न स्वा हा ॥ इ रु च ना य रु रु धी पा नि य रु
य स्वा हा ॥ अ ग न य पु न ना धि प नी य स्वा हा ॥ इ न रु

[illegible]

मन्त्रेन विधीयते

[illegible]

१ मं च अत्र हात्र प्रजायाया ॥ कंचमी ॥ लाससीत प्रकनया शरणाग्नी
वीय ॥ ॥ ईहा लरुं ॥ सीतया न चान्न ॥ पानायेत य ॥ ३
अनय प्रव सहा दाय पाक न पाया च मनार्थं पुनि च स्वाहा ॥
संख सख न हाय ॥ यन नादन याया ॥ ४ सर्व पाप वी घुमा नर
सीतुं नरुं हर स्वाहा ॥ ॥ ५ काप नापी या शान य ॥ यन अय
महा दाने वा नः स्वामी वा नः ॥ ६ अगन य महा दिव्या विरा जी
स्व महा श्री य ह वा नः वा नः वा नः ॥ दान य न गं न्री पा ली नः

पुः अरु न धाम यः ॥ ईहा लरुं स्वाहा ॥ ॥ यन अग्नी य
पन ॥ यन धाम न ॥ गम हा हा व या य ॥ ३ वरु वरु न अरु धाम नः
नग्रा जी नाग्नी मधु प्र वा ना एवः पीत व र्धु म नः सुख च नः
एव वा मय म प्र व नः नः नः नः ॥ सर्व व नः दान मा जी धनः पी
नाम व नः धनः ॥ ४ हा प वी न गी न गः ॥ नग म नः नः नी वी न स म
या अग्नी वी हा नः ॥ ५ अहं ही महा एत य नः नः नः स प म ही
ना नः नः ॥ महा नः नः नः नः नः नः ॥ ६ न न न न न

५

नः परमात्मनश्चैव प्रपन्नः कुरु जीत च पुनः वदतीति हीमनादं॥
वीह्य न ह्यन प्रपन्नो हीनः एव हे य ह्यनः पचमूर्तिः
न सापिहं॥ ॥ यन कुरुमानघु न के य कुरु॥ यन
धुपः सुधुमसु॥ इव कुरु सख्यार्ह ह्युत्सोहा॥ यन य
स्वधन॥ यचापहा जपूरायाय॥ इति योहा॥ यन कुरु
मानकीय न ननः धाव न स काख न वदतीति॥ इति यो व

वृसमाधर्माः शक्रासुधवीजाः श्रुत हीन हीनाना चः
हृत्कर्मसमस्तव॥ यन न कुरु य न कुरु य न कुरु य न कुरु
उतगा नृनी मुखनः प्रकाशनः नव ह्युत्सोहा॥ यन कुरु
वीहाय॥ ॥ यन स्या चार्तः य न स्या लदय॥
इति योहा॥ इति यन कुरु स कुरु य॥ यन कुरु स कुरु य
य॥ इति योहा॥ इति योहा॥ इति योहा॥ इति योहा॥

गुह्यशुद्धिक्रिया

II-323

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महानिहार

४
इवजस्वमाजायस्वाहा॥पद्मासी॥इवज्जुमजायस्वाहा॥खदी
जसी॥इवज्वाधायस्वाहा॥श्रुपामागीसी॥इवज्जुव्यहायस्वा
हा॥उजसी॥इवज्गुपयस्वाहा॥उद्वज्जसी॥इवज्जुसनीश्च
जायस्वाहा॥सम्पासी॥इवज्जुवाधीवीकृप्यस्वाहा॥डाप्रगम
सी॥इवज्जुचगायस्वाहा॥पीशागमसी॥इवज्जुवेद्युवीजा
यस्वाहा॥उद्युमजसी॥इवज्जुमधुनयस्वाहा॥मधुससी॥

इवज्जुश्रुहाहायस्वाहा॥श्रुहासी॥इसर्वपापयसस
नायस्वाहा॥वेकंठसी॥इवज्जुसहब्राहायस्वाहा॥श्राम
सी॥इवज्जुसुपसमनायस्वाहा॥कमावसी॥इवज्जु
सर्वेभारवायस्वाहा॥गंहासी॥इववर्हीप्रामनाय
स्वाहा॥गंहीपसी॥इवज्जुसंलनायस्वाहा॥मयनसी॥
इवज्जुश्रुपतिवजायस्वाहा॥इसम॥इवज्जुपुंयस्वा

७ हा॥ दाहासी॥ ॥ थन जावी ही इय॥ धम १० इय
पूजा एतस चान गुरु निस्वयं इय॥ थन गुरु सा पाणु ह
संखन या डा अग्नी सी मानवी य॥ का क्रम उ व ड स ल श
धा न य र सा ध य र हु हु स्वा हा ॥ थ पु थ मा हु नि घु ग ग
य॥ का स का य॥ स्व सी वा न॥ पु थ मा हु नी ग ड्ड र स्व सी स्वा
हा॥ थ न धम न॥ ग ग व ड्डि श च म ना दि च रे वाः सा व न

प्रहाना अग्नि वी हा वाः का ला का ला र मे ग ह्य ह दि क्र म वा
च दा स नः प जी म ग्ग्रा धी प नीः बी ड नी र व न ची ड्डः प पी
ना स नः म ग्ग्रा धी प नी स मा ध न य वी हा वा॥ स्व ह दि क्र
म य स्वा नाः हान क्र म हान स व च व ड्डा र सा दि ही प्रा नी
यः पु न मा ह वाः स व ष ह न स व स म य स व य णी ज
स्वी ज मि ह न वी हा वा॥ ॥ थ न य ग मं व ज र व प पु डा॥
थ न ह न ह न॥ का स न स्व सी वा न॥ उ हाना ड्ड न पु नी

बालिका कृतं

[illegible]

[illegible]

अहीमपर्वतः खजारा नमजवजारा यकासी वरुवगीची

नमो नमो सां नमो स्वस्ति नमो नमः ५ नमः स्वां दीप्ती स्वाहा ॥

ॐ ह्रीं बुधाय नमः सा स व स व ज नी ॐ खनी चयनी

गुरुजगद्गुरुप्राप्तप्राप्तवतीगम्भीरस्वस्मानुदानपकिदिग

वीदिगणस्वाहा॥ ॥ यनदिगुवरीवय॥ दानपति

[illegible]

वीरधरवीरपाठककृतसादीःसुदीकृमंशसकामनाथ

खसीखाह॥ यत्तपनीयाय॥ पुनरीचीयन्नाय॥ नैम्यं

अवसाहायसी ॥ स्वा वि रु व म ल य शायकीना ॥ ब्रह्मा

जमहाहिपनात्वाऽकननऽपूषाचक्राऽम
पिपत्रिपुत्रापीताऽपुत्राचक्राऽम

॥ अथ नूतन विद्यायाः श्री सावादा ॥ सुमय काव्या ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार II-323



नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥



उसूत मामुखसिदवदु

